विषय-परिचय

पूर्व प्रकाशित छह पुस्तकोंमें षट्खंडागमका प्रथम खंड जीवट्ठाण प्रकट हो चुका है । प्रस्तुत पुस्तकमें दूसरा खंड खुद्दाबंध पूरा समाविष्ट है । इस खंडका विषय उसके नामसे ही सूचित हो जाता है कि इसमें क्षुद्र अर्थात् संक्षिप्तरुपसे बंध अर्थात् कर्मबन्धका प्रतिपादन किया गया है । पाठकोंको इस बृहत्काय ग्रंथमें बन्धका विवरण देखकर स्वभावत: यह प्रश्न उत्पन्न हो सकता है कि इसे क्षुद्र व संक्षिप्त विवरण क्यों कहा ? किन्तु संक्षिप्त और विस्तृत आपेक्षिक संइाएं है । भूतबली आचार्यने प्रस्तुत खंडमें बन्धक अनुयोगका व्याख्यान केवल १५८९ सूत्रोंमें किया है जब कि उन्होंने बंधविधानका विस्तारसे व्याख्यान छठे खंड महाबन्धमें तीस हजार ग्रंथरचना रुपसे किया । इन्हीं दोनों खंडोंकी परस्पर विस्तार व संक्षेपकी अपेक्षासे छठा खंड महाबन्ध कहलाया और प्रस्तुत खंड खुद्दाबंध या क्षुद्रकबन्ध।

खुद्दाबन्धकी उत्पत्ति प्रथम पुस्तककी प्रस्तावनाके पृ, ७२ पर दिखाई जा चुकी है और उसके विषय व अधिकारोंका निर्देश उसी प्रस्तावनाके पृष्ठ ६५ पर दिया गया है । उसके अनुसार बारहवें श्रुताङ्ग दृष्टिवादके चतुर्थ भेद पूर्वगतका जो दूसरा आग्रायणीय था उसकी पूर्वान्त आदि चौदह वस्तुओंमेंसे पंचम वस्तु चयनलब्धि के कृति आदि चौवीस पाहुडोंमेंसे पाहुडं बन्धन के बन्ध, बन्धनीय, बन्धक और बन्धविधान नामक चार अधिकारोंमेंसे बन्धक अधिकारसे इस खंडकी उत्पत्ति हुई है ।

कर्मबन्धके कर्ता है जीव जिनकी प्ररुपणा जीवट्ठाण खण्डमें सत् संख्या आदि आठ अनुयोग द्वारोंके भीतर मिथ्यावादि चौदह गुणस्थानों द्वारा व गति आदि चौदह मार्गणाओंमें की जा चुकी है । प्रस्तुत खण्डमें उन्हीं जीवोंकी प्ररुपणा स्वामित्त्वादि ग्यारह अनुयोगों द्वारा गुणस्थान विशेषणको छोडकर मार्गणास्थानोंमें की गई है । यही इन दोनों खण्डोंमें विषय प्रतिपादनकी विशेषता है । इस खण्डके ग्यारह अनयोग द्वारोंका नामनिर्देश स्वामित्त्वानुगमके दूसरे सूत्रमें किया गया हैं जिनके नाम हैं---(१) एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्व (२) एक जीवकी अपेक्षा काल (३) एक जीवकी अपेक्षा अन्तर (४) नाना जीवोंकी अपेक्षा भंग विचय (५) द्रव्यप्रमाणानुगम (६) क्षेत्रानुगम (७) स्पर्शनानुगम (८) नाना जीवोंकी अपेक्षा काल (९) नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर (१०) भागाभागानुगम और (११) अल्पबहुत्वानुगम । इनसे पूर्व प्रास्ताविक रुपसे बंधकोंके सत्त्वकी भी प्ररुपणा की गई है और अन्तमें ग्यारहों अनुयोगद्वारोंकी चूलिका रुपसे महादंडक दिया गया है ।

इस प्रकार यद्यपि-खुद्दाबन्धकेप्रधान ग्यारह ही अधिकार माने गये हैं, किन्तु यथार्थत: उसकेभीतर तेरह अधिकारोंमें सूत्र रचना पाई जाती है जिनकेविषयका परिचय इस प्रकार है--

षट्खंडागमकी प्रस्तावना

अन्धक-सत्वप्ररुपणा

इस प्रस्तावना रुप प्ररुपणामें केवल ४३ सूत्र हैं जिनमें चौदह मार्गणाओंकेभीतर कौन जीव कर्म बन्ध करते हैं और कौन नहीं करते यह बतलाया गया है । सब मार्गणाओंका मभितार्थ यह निकलता है कि जहां तक योग अर्थात् मन वचन कायकी क्रिया विद्यमान है वहां तक सब जीव बन्धक हैं, केवल अयोगी मनुष्य और सिध्द अबन्धक हैं ।

१ एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्व

इस अधिकारमें ९१ सूत्र हैं जिनमें बतलाया गया है कि मार्गणाओं सम्बन्धी गुण व पर्याय जीवकेकौनसे भावोंसे प्रकट होते हैं । इनमें सिध्दगति व तत्सम्बन्धी अकायत्व आदि गुण, केवलज्ञान, केवलदर्शन व अलेश्यत्व तो क्षायिक लब्धिसे उत्पन्न होते हैं । एकेन्द्रिय आदि पांचो जातियां, मन वचन काययोग, मति, श्रुत, अवधि और मन:पर्यय ज्ञान, परिहारशुध्दि संयम, चक्षु, अचक्षु व अवधि दर्शन, सम्यग्मिथ्यात्व और संज्ञित्व ये क्षयोपशम लब्धिजन्य हैं । अपगतवेद, अकषाय, सूक्ष्मसाम्पराय व यथाख्यात संयम, ये औपशामिक तथा क्षायिक लब्धिसे प्रकट होते हैं । सामायिक व छेदोपस्थापन संयम और सम्यग्दर्शन औपशामिक, क्षायिक व क्षायोपशामिक लब्धिसे प्राप्त होते हैं । तथा भव्यत्व, अभव्यत्व एवं सासादनसम्यक्त्व, ये परिणामिक भाव हैं । शेष गति आदि समस्त मार्गणान्तर्गत जीवपर्याय अपने अपने कर्मोकेव विरोधक कर्मोकेउदयसे उत्पन्न होते हैं । सूत्र ११ की टीकामें धवलाकारने एक शंकाकेआधारसे जो नामकर्मकी प्रकृतियोंके उदयस्थानोंका वर्णन किया है वह उपयोगी है ।

२ एक जीवकी अपेक्षा काल

इस अनुयोगद्वारमे २१६ सूत्र है जिनमें प्रत्येक गति आदि मार्गणामें जीवकी जघन्य और उत्कृष्ट कालस्थितिका निवारण किया गया है । जीवस्थानमें जो कालकी प्ररुपणा की गई है वह गुणस्थानोंकी अपेक्षा है, किन्तु यहां गुणस्थानका विचार छोडकर मार्गणाकी ही अपेक्षा काल बतलाया गया है यही इन दोनोंमें विशेषता है ।

३ एक जीवकी अपेक्षा अन्तर

इस अनुयोगद्वारके १५१ सूत्रोंमें यह प्रतिपादन किया गया है कि एक जीवका गति आदि मार्गणाओंके प्रत्येक अवान्तर भेदसे जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल अर्थात् विरहकाल कितने समयका होता है ।

विषय-परिचय

४ नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय

इस अनुयोगद्वारमें केवल २३ सूत्र हैं । भंग अर्थात् प्रमेद और विचय अर्थात् विचारणा । अतएव प्रस्तुत अधिकारमें यह निरुपण किया गया है कि भिन्न भिन्न मार्गणाओंमें जीव नियमसे रहते हैं या कभी रहते हैं और कभी नहीं भी रहते । जैसे नरक, तिर्यच, मनुष्य और देव इन चारों गतियोंमें जीव सदैव नियमसे रहते ही है, किन्तु मनुष्य अपर्याप्त क भी होते भी हैं और कभी नहीं भी होते । उसी प्रकार इन्द्रिय, काय, योग आदि मार्गणाओंमें भी जीव सदैव रहते ही हैं, केवल वैक्रियिक मिश्र, आहार, व आहारमिश्र काययोगोंमें, सूक्ष्मसाम्पराय संयमें तथा उपशम, सासादन, व सम्यग्मिथ्यादृष्टि सम्यक्त्वमें, जीव कभी रहते हैं और कभी नही भी रहते । इस प्रकार उक्त आठ मार्गणाए सान्तर हैं और शेष समस्त मार्गणाए निरन्तर हैं (देखो गो.जी. गाथा १४२) ।

५ द्रव्यप्रमाणानुगम

इस अनुयोगद्वारके १७१ सूत्रोंमें भिन्न भिन्न मार्गणाओंके भीतर जीवोंका संख्यात, असंख्यात व अनन्त रुपसे अवसर्पिणी उत्सपिर्णी आदि कालप्रमाणोंसे अपहार्य व अनपहार्य रुपसे एवं योजन, श्रेणी, प्रतर व लोकके यथायोग्य भागांश व गुणित क्रम रुपसे प्रमाण बतलाया गया है । पूर्व निर्देशानुसार जीवस्थानके द्रव्यप्रमाण व इस अधिकारके प्ररुपणमें विशेषता केवल इतनी ही है कि यहां गुणस्थानकी अपेक्षा नहीं रखी गई ।

६ क्षेत्रानुगम

इस अनुयोगद्वारमें १२४ सूत्रोंमें चौदह मार्गणानुसार सामान्यलोक, अधोलोक, ऊर्ध्वलोक, तिर्यग्लोक व मनुष्यलोक, इन पांचों लोकोंके आश्रयसे स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान सात समुद्घात और उपपादकी अपेक्षा वर्तमान निवासकी प्ररुपणा की गई है । पूर्वके समान यहां भी गुणस्थानोंकी अपेक्षा नहीं रखी गई।

७ स्पर्शनानुगम

इस अनुयोगद्वारमें २७४ सूत्रोंमें गुणस्थानक्रमको छोडकर केवल चौदह मार्गणाओंके अनुसार सामान्यादि पांच लोकोंकी अपेक्षा स्वस्थान, समुद्घात व उपपाद पदोंसे वर्तमान व अतीत काल-सम्बन्धी निवासकी प्ररुरणा की गई है।

८ नाना जीवोंकी अपेक्षा कालानुगम

इस अनुयोगद्वारमें ५५ सूत्रोंमें चौदह मार्गणानुसार नाना जीवोंकी अपेक्षा अनादिअनन्त, अनादि-सान्त, सादि-सान्त कालभेदोंको लक्ष्य कर जीवोंकी कालप्ररुपणा की गई है ।

९ नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरानुगम

इस अनुयोगद्वारमें ६८ सूत्रोंमें चौदह मार्गणानुसार नाना जीवोंकी अपेक्षा बन्धकोंके जघन्य व उत्कृष्ट अन्तरकालकी प्ररुपणा की गई है।

१० भागाभागानुगम

इस अनुयोगद्वारमें ८८ सूत्रोंमें चौदह मार्गणाओंके अनुसार सर्व् जीवोंकी अपेक्षा बन्धकोंके भागाभागकी प्ररुपणा की गई है । यहां भागसे अभिप्राय अनन्तवें भाग, असंख्यातवें भाग और संख्यातवें भागसे; तथा अभागसे अभिप्राय अनन्त बहुभाग, असंख्यात बहुभाग व संख्यात बहुभागसे है । उदाहरण स्वरुप नारकी जीव सब जीवोंकी अपेक्षा कितने भागप्रमाण हैं ? इस प्रश्नके उत्तरमें उन्हें सब जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण बतलाया गया है ।

११ अल्पबहुत्वानुगम

इस अनुयोगद्वारमें २०५ सूत्रोंमें चौदह मार्गणाओंके आश्रयसे जीवसमासोंका तुलनात्मक प्रमाणस्वरुप किया गया है । इस प्रकरणमें एक यह बात ध्यान देने योग्य है कि सूत्रकारनें वनस्पतिकाय जीवोंका प्रमाण विशेष अधिक बतलाया है जिसका अभिप्राय धवलाकारने यह प्रकट किया है कि जो एकेन्द्रिय जीव निगोद जीवोंसे प्रतिष्ठित हैं उनका वनस्पतिकाय जीवोंके भीतर ग्रहण नहीं किया गया। यहां शंकाकारके यह पूछनेपर कि उक्त जीवोंकी वनस्पति संज्ञा क्यों नहीं मानी गई, धवलाकारने उत्तर दिया है कि यह प्रश्न गौतमसे करो, हमने तो यहां उनका अभिप्राय कह दिया । (पृ. ५४१) ।

इन ग्यारह अधिकारोंके पश्चात एक अधिकार चूलिकारुप महादंडकका है जिसके ७९ सूत्रोंमं मार्गणा विभागको छोडकर गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य पर्याप्तसे लेकर निगोद जीवों तकके जीवसमासोंका अल्प बहुत प्रतिपादन किया गया है और उसीके साथ क्षुद्रकबन्ध खण्ड समाप्त होता हैं ।